804

Total Pages : 3 **Roll No. ----------**

PJ-102

फलित ज्योतिष के आधारभूत सिद्धान्त
फलित ज्योतिष में डिप्लोमा/प्रमाणपत्र
(डी0पी0जे0/सी0पी0जे0–12/16/17)
सत्र 2021 (Winter)

समयः 2 घण्टा **पूर्णांकः 100**

नोट : यह प्रश्न पत्र सौ (100) अंकों का है जो दो (02) खण्डों, क तथा ख में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड में दिए गए विस्तृत निर्देशों के अनुसार ही प्रश्नों को हल करना है।

खण्ड –क

(दीर्घ उत्तरों वाले प्रश्न)

नोट : खण्ड 'क' में पाँच (05) दीर्घ उत्तरों वाले प्रश्न दिये गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए छब्बीस (26) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल दो (02) प्रश्नों के उत्तर देने हैं। [2 x 26 = 52]

प्र0–1 ज्योतिषशास्त्र की परिभाषा बताते हुए इस शास्त्र के भेदों की आधुनिक युग में प्रासङ्गिकता सिद्ध करें।

P.T.O.

प्र0–2 राशियों और नक्षत्रों के पारस्परिक सम्बन्ध का विस्तारपूर्वक वर्णन करें।

प्र0–3 ग्रहों के गुण धर्मों का विस्तारपूर्वक वर्णन करें।

प्र0–4 तुला लग्नस्थ शनि की महादशा में विविध ग्रहों की अन्तर्दशा का वर्णन करें।

प्र0–5 भारतीय काल गणना का महत्व बताते हुए इसकी वैज्ञानिकता स्पष्ट कीजिए।

खण्ड – ख

लघु उत्तरों वाले प्रश्न

नोट : खण्ड 'ख' में आठ (08) लघु उत्तरों वाले प्रश्न दिये गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए बारह (12) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल चार (04) प्रश्नों के उत्तर देने हैं। [4 x 12 = 48]

प्र0–1 सूर्य से निर्मित होने वाले दो राजयोगों का सोदाहरण वर्णन कीजिए।

प्र0–2 बृहस्पति के द्वादश भावों में शुभाशुभफल का विवेचन करें।

प्र0–3 गजकेसरी, छत्र और गदा योगों का सोदाहरण तथा सफल वर्णन करें।

प्र0–4 तिथि क्या है? विस्तारपूर्वक वर्णन करें।

प्र0–5 सूर्य के द्वादश राशियों में शुभाशुभ फल का विवेचन करें।

प्र0–6 ग्रहों की बलादि–अवस्थाओं और उनकी दृष्टियों का वर्णन करें।

प्र0–7 ग्रहों की पारस्परिक मैत्री का वर्णन करें।

प्र0–8 किन्ही दो अरिष्ट योगों का सोदाहरण वर्णन करें।

———————————